**International Research Journal of Human Resource and Social Sciences**
**ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)**
**Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 4, April 2018**
**Website**-www.aarf.asia,**Email**:editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# कमलेश्वर के उपन्यासों में नाटकीयता : एक अध्ययन

**डॉ. सुमन देवी**
**असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी, संत मोहन सिंह खालसा लवाना गर्ल्ज कॉलेज, बराड़ा**

नाटकीयता का अर्थ है– आकस्मिकता। जब किसी घटना या चरित्र के कारण किसी स्थिति में परिवर्तन आ जाता है तो वहाँ नाटकीयता होती है। उपन्यास और नाटक दोनों में ही कथानक, पात्र, संवाद, मार्मिक दृश्यों का चित्रण, आकस्मिक रूप से पात्रों का आना–जाना, आकस्मिक अंत आदि गुण होते हैं। परन्तु रंगमंच तथा विषय की दृष्टि से दोनों अलग–अलग हैं। फिर भी कथासाहित्य में विभिन्न नाटकीय गुणों का उपयोग किया जाता है। हड़सन ने लिखा है, ''कोई भी नाटकीय कहानी किसी संघर्ष विरोधी व्यक्तियों, आवेगों या स्वार्थों की टकराहट से जन्म लेती है। कोई भी नाटक जिसमें संघर्ष का तत्त्व कम है, नाटक की दृष्टि से दोषपूर्ण समझा जायेगा, भले ही उसमें दूसरे गुण बहुत अधिक क्यों न हो।''[i]

कमलेश्वर के उपन्यासों में भी नाटकीयता देखने को मिलती है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में श्यामलाल के अन्तर्द्वन्द्व के कारण नाटकीयता है। श्यामलाल जब

**© Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

दूसरों के बच्चों को स्कूल में जाते हुए देखता है तो बीरन को देखकर सोचता है कि, ''तब एकाएक उन्हें लगता है कि उनका बीरन कितना समझदार है। कम से कम चार वर्दियाँ तो बच्चों के पास होनी चाहिए, परन्तु उसके पास सिर्फ दो ही हैं और वे भी पुरानी। पर उसने कभी परेशान नहीं किया। वह जानता है कि बाबू जी दिक्कत में हैं और घर बड़ी मुश्किल से चल रहा है।''[ii]

'समुद्र में खोया आदमी' उपन्यास में पात्रों के अभिनय के कारण भी नाटकीयता है। वीरन के पिता श्यामलाल रहते तो अपने परिवार के साथ हैं, परन्तु जब बीरन की मृत्यु हो जाती हो तो वे सरकार से मुआवजा लेने के लिए अभिनय करते हैं कि वे दोनों अलग–अलग हैं। जैसे– ''बेटे का बाप जिन्दा तो है, पर जब वह छोटा ही था, तभी से उसका बाप सारी जिम्मेदारियाँ छोड़कर अलग हो गया। माँ ने ही मेहनत मजदूरी करके लड़के को पढ़ाया–लिखाया।''[iii]

प्रस्तुत उपन्यास में विरोधाभास के कारण भी नाटकीयता है। बीरन अमेरिकी अभियान के साथ दक्षिणी ध्रुव की यात्रा पर जाना चाहता है, परन्तु वह सोचता है कि पता नहीं कमाण्डर साहब उन्हें वहाँ जाने की इजाजत देते हैं या नहीं। यहाँ विरोधाभास है। इजाजत मिल भी सकती है और नहीं भी।

'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास में सत्तार के अन्तर्द्वन्द्व के कारण नाटकीयता है। सलमा जब सत्तार से कहती है कि तुम मुझे रात को मिलना। तब सत्तार सोचता है कि, ''उसे लगता था कि अभी तक सलमा को उसने अच्छी तरह भर आँख नहीं देना है। रात वह उसे कच्चे आँगन में फैली चाँदनी में घसीट ले जाएगा.....। आसमान में बादल हुए तो भी चाँद का फूटता हुआ उजास तो होगा, उसी में वह सलमा को बहुत–बहुत प्यार

करेगा। कोठरी में लेटे–लेटे वह सलमा के बार–बार देखे हुए चेहरे को याद करता तो लगता है, जैसे – कुछ भी याद नहीं।''[iv]

'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास में पात्रों के अभिनय के कारण भी नाटकीयता है। वैसे तो साईं बस्ती के सभी झगड़ों का निपटारा करता है, परन्तु अभिनय ऐसे करता है कि वह झगड़ों से बहुत दूर है, ''सत्तार और सलमा का मामला इसने निपटाने की कोशिश की थी। यूँ साई दुनिया की बातों से बहुत दूर होने का नाटक करता था, पर भीतर ही भीतर वह उसी में रमा हुआ था।''[v]

प्रस्तुत उपन्यास में शब्दों की आवृत्ति के कारण भी नाटकीयता है। ''अब मंदिरों में बिला नागा शाम को आरती होती थी और घंटे घड़ियालों का शोर देर–देर तक शाम के धुंधलके में ठहर जाता था.....। उनकी गूँज दूर–दूर तक सुनाई पड़ती थी।''[vi] यहां पर दूर–दूर तथा देर–देर शब्दों की आवृत्ति के कारण नाटकीयता है जो उपन्यास को प्रभावशाली तथा प्रामाणिक बनाती है।

'तीसरा आदमी' उपन्यास में नरेश के अन्तर्द्वन्द्व के कारण नाटकीयता है। नरेश जब पटना चला जाता है तो वह सोचता है कि चित्रा उसके पास जरूर आयेगी। परन्तु वह उसके पास नहीं आती। तब वह सोचता है कि, 'मैंने कभी यह सोचा भी नहीं था। जिन्दगी यों मोड़ ले जायेगी और किनारे इस प्रकार छूट जाएँगे, यह ख्याल तक दिमाग में नहीं आया था और अब तो रास्ते बहुत बदल गये हैं– कोई एक–दूसरे को नहीं काटता...। पहले सोचा था कि शायद वह दिन फिर आये, जब चित्रा आकर फिर मेरे रास्ते में खड़ी हो जाए। लेकिन अब यह सब नहीं होगा।''[vii]

प्रस्तुत उपन्यास में पति–पत्नी के बीच जो तनाव है, उसके कारण भी नाटकीयता

है। नरेश और उसकी पत्नी चित्रा में तीसरे व्यक्ति सुमन्त के कारण तनाव रहने लगता है। जैसे– ''मेरे पास ऐसा कोई समय नहीं था, जिसमें मैं चित्रा से बात कर पाता। एकांत मिलना तो दुर्लभ ही हो गया था। शाम को कभी कमरे से बाहर निकलते तो अधिकतर सुमन्त साथ होता।''[viii]

'काली आँधी' उपन्यास में आकस्मिक रूप से जो मोड़ आये हैं, उनके कारण भी नाटकीयता है। जग्गी बाबू और मालती का एक–दूसरे से मिलना, दोनों की शादी होना, मालती के पिता का मर जाना, जग्गी बाबू के घर लड़की लिली का होना, जग्गी बाबू और मालती का चुनाव लड़ने साथ जाना, अगले चुनावों में जग्गी बाबू द्वारा मालती का साथ न देना, उससे अलग हो जाना, जग्गी का होटल गोल्डन सन् का मैनेजर बन जाना, लिली को पंचमढ़ी होस्टल में पढ़ने के लिए भेजना, मालती द्वारा मुख्यमंत्री का चुनाव लड़ना, भोपाल में चुनाव के समय जग्गी बाबू के होटल में रहना, वहाँ दोनों का अचानक मिलना, मालती का चुनाव में जीत आना, लिली की स्कूल की छुट्टियाँ हो जाना, उसका अपने पापा के पास भोपाल आना, मालती का लिली से मिलना, लिली का अपना माँ को न पहचानना, लिली और उसके पिता का पंचमढ़ी चले जाना, मालती का दिल्ली चले जाना आदि मोड़ उपन्यास में आकस्मिक ही आये हैं जो उपन्यास को नाटकीय बनाते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास पात्रों के अभिनय के कारण भी नाटकीय है। मालती कहती है कि वह दंगाग्रस्त इलाके का दौरा करेगी। तब जग्गी बाबू कहता है कि वैसे तो आपको उस इलाके में नहीं जाना चाहिए। फिर मुझे कोई हक भी नहीं कि मैं आपको रोकूँ। तब मालती की आँखों में आँसू आ जाते हैं, लेकिन वह आँखों पर चश्मा लगाकर उन्हें जग्गी से छिपाने का अभिनय करती है। जैसे– ''मालती जी की आँखे छलछला आई थी। उन्होंने आदत के

मुताबिक पलकों को झपका–झपकाकर आँसू संभालने की कोशिश की थी।..... पर न संभाल पाने के कारण अपने हैंडबैग से धूप का चश्मा निकाला था और चुपचाप लगा लिया था। शायद इसीलिए कि जग्गी बाबू उनकी आँखों में आये आंसुओं को न देख पाये।''[ix]

'आगामी अतीत' उपन्यास भी पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व के कारण नाटकीय है। कमलबोस जब कार्सियांग में चंदा की बेटी चांदनी से मिलता है तो सोचता है कि, ''क्या है जो उन्हें चांदनी के पास सीधे–सीधे जाने से रोकता है? यह मन रह रहकर संकुचित क्यों होता है? कहीं ऐसा तो नहीं कि चंदा के बारे में जान लेने की उत्सुकता भर से उनका अहं तृप्त हो जायेगा। चंदा की जिंदगी के तहस–नहस हो जाने की करुणा कहीं उनके व्यक्तित्व की स्पर्धापूरित तृष्णा को शांत कर लेने के काम तो नहीं आ जायेगी? मन को दुख से भरे हुए सुख का एहसास देकर मिट तो नहीं जायेगी।''[x]

प्रस्तुत उपन्यास पात्रों के अभिनय के कारण भी नाटकीय है। कमलबोस जब अपने पैर की मोच दिखाने चंदा के पिता वैध के पास आता है तो चंदा कमलबोस को जानते हुए भी अपने पिता के सामने ऐसा अभिनय करती है कि वह उसे नहीं जानती। जैसे– ''वैध जी आये थे तो उसने बिल्कुल अनजान बनते हुए कहा था, बाबा कोई मरीज इंतजार कर रहा है।''[xi]

'सुबह...दोपहर....शाम' उपन्यास पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व के कारण नाटकीय है। जब शांता अपने पिता के साथ गाँव को छोड़ कर जा रही है तो उस समय उसके अन्र्द्वन्द्व का चित्रण करते हुए लेखक कहता है कि, ''अब गाँव आना होगा या नहीं? बड़ी अम्मा और बड़े बापू से मिलना होगा भी या नहीं...., इन रास्तों को इकौआ और सरबेरी की झाड़ियों को दुबारा कभी देख भी पाएगी या नहीं....। अगली किसी गर्मी में गोबर लिपी तिहरी में ठंडक में बैठ

भी पाएगी या नहीं।''[xii]

प्रस्तुत उपन्यास पात्रों के अभिनय के कारण भी नाटकीय है। प्रवीण जब शांता को ब्याहने जाता है तो घर में लड़कियाँ पीछे से नाटक खेलती हैं। कुंती बाबू जी का कोट और नवीन का पाजामा पहनकर मूँछ लगाकर दूल्हा बनने का अभिनय करती है और जसराना वाली चाची की छुटकी दुल्हन बनकर वैसा ही अभिनय करती है, जैसा वहाँ ब्याह में हुआ होगा। जैसे– ''घर में नाटक चल रहा था। लड़कियों का नाटक। ये जमनापार वालों की कुन्ती बड़ी हॅसोड़ थी। उसने बाबू जी का पुराना कोट और नवीन भैया का पजामा पहन के मूँछे लगा ली थी..... और दूल्हा बन गई थी। जसराना वाली चाची की छुटकी दुल्हन बनी थी.... और घर में लगातार नाटक चल रहा था, ठीक वैसे जैसे वहाँ ब्याह में हुआ होगा।''[xiii]

'रेगिस्तान' उपन्यास भी पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व के कारण नाटकीय है। विश्वनाथ जब राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने के लिए देश के कोने–कोने में जाता है तो वह सोचता है कि, ''आखिर किसलिए उसने जिन्दगी बर्बाद कर दी? राष्ट्रभाषा प्रचार के लिए? हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए? पर हुआ क्या...? सोचा तो यही था कि आजादी मिलने से पहले ही देश में अपनी भाषाएँ आ जाए....., ताकि देश गूंगा न रह जाए और सब भाषाओं को जोड़ने के लिए हिन्दी आ जाए.... पूरे देश को अपनी आवाज मिल जाए.... लेकिन हुआ क्या...? जहाँ पहले हिन्दी थी, अब वहाँ भी हिन्दी नहीं रही है...., कहाँ है अपनी भाषाएँ? कहाँ हैं हिन्दी?''[xiv]

अंत में हम कह सकते हैं कि कमलेश्वर के उपन्यासों में जो नाटकीयता आई है वह उपन्यास को प्रामाणिक और कौतुहल युक्त बनाने में पूर्णतः समर्थ है।

**संदर्भ–**

[i]सिद्धनाथ कुमार– नाटकालोचन के सिद्धान्त, पृ. 99 प्रकाशक– वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 प्रथम सं., 2004

[ii]कमलेश्वर– 'समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृ. 15

[iii]कमलेश्वर– 'समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृ. 99

[iv]कमलेश्वर– समग्र उपन्यास, पृ. 99, प्रकाशक– राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, सन् 2008

[v]वही, पृ. 93

[vi]वही, पृ. 127

[vii]कमलेश्वर– समग्र उपन्यास, पृ. 159

[viii]वही, पृ. 170

[ix]वही, पृ. 398

[x]कमलेश्वर– समग्र उपन्यास, पृ. 486

[xi]वही, पृ. 454

[xii]कमलेश्वर– 'सुबह.... दोपहर.... शाम', पृ. 30, प्रकाशक– राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, सन् 1985

[xiii]वही, पृ. 120

[xiv]कमलेश्वर– रेगिस्तान, पृ. 17, प्रकाशक– राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, सन् 1988